UGC Approved, Journal No. 48416 (IJCR), Impact Factor 6.0 ISSN : 2393-8358

Interdisciplinary Journal of Contemporary Research

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 11, No. 1 January, 2024

PEER REVIEWED JOURNAL

EDITOR

Dr. H.L. Sharma
Associate Professor
Shimla, Himachal Pradesh

Dr. Hans Prabhakar Ravidas
Assistant Professor
Department of Performing Arts,
National Sanskrit University, Tirupati

Dr. Anil Kumar
Assistant Professor, Department of History
Rajdhani College, University of Delhi

Published by
VPO Nandpur, Tehsil-Jubbal, District-Shimla, Himachal Pradesh
email : ijcrournal971@gmail.com, Website : ijcrjournals.com

▸	उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की कोचिंग के प्रति अभिरूचि का अध्ययन **डॉ0 शिवम सक्सेना, डॉ0 अमर बहादुर एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	93-96
▸	विद्यालयी बच्चों पर प्राणायाम का सकारात्मक प्रभाव **अमृता कुमारी एवं आलोक कुमार पाण्डेय**	98-102
▸	प्रशिक्षण महाविद्यालयों में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की दंड के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन **मनेन्द्र कुमार लहकोडिया, विनोद कुमार शर्मा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	103-106
▸	माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं निजी विद्यालयों में अध्यनरत विद्यार्थियों में भारतीय संस्कृति के स्तर का अध्ययन **गजानंद सैन एवं डॉ0 मोहनलाल मेघवाल**	107-109
▸	माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक वंचना का अध्ययन **महेश चंद जाटव, अमन कुमार एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	110-112
▸	आधुनिक भारत में प्रचलित पश्चिमी उपनिवेशवादी 'कास्ट' की संकल्पना का अवलोकन और समीक्षा **डॉ0 ओंकार चतुर्वेदी**	113-116
▸	उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के संस्थाप्रधानों की कार्यरत जीवन की गुणवत्ता का अध्ययन **जयसिंह जाटव, ज्योति कश्यप एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	117-120
▸	करौली जिले के सरकारी व गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कक्षा शिक्षण के प्रति जवाबदेही का तुलनात्मक अध्ययन **श्री जगदीश प्रसाद शर्मा, श्री छैल बिहारी शर्मा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	121-125
▸	माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में नए सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाई जाने वाले पाठ्यक्रम का विद्यार्थियों अध्यापकों एवं अभिभावकों के मध्य पाठ्यक्रम संतुष्टीकरण का विश्लेषणात्मक अध्ययन **श्रीमती मुकेशी मीना, श्री नितेंद्र कुमार शर्मा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	126-128
▸	स्वामी विवेकानन्द के दार्शनिक एवं शैक्षिक चिन्तन का अध्ययन **श्री मनेन्द्र कुमार लहकोडिया, श्री जगदीश प्रसाद शर्मा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	129-132
▸	सामान्य वर्ग व अन्य पिछड़ा वर्ग के बी0एड0 में अध्यनरत प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व एवं समायोजन का अध्ययन **विनोद कुमार शर्मा, मो0 आरिफ एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	133-136
▸	स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव **मोहम्मद रफी एवं डॉ0 माहेजबी**	137-139
▸	सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की नारी की सामाजिक स्वतंत्रता एवं नारी समानता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन **विष्णु कुमार शर्मा, डॉ0 विवेक मिश्रा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	140-142
▸	The state of Women's Education in India impacting their Work Participation Rates with Special Reference to the Handloom Industry of Pilkhuwa **Anamika Pandey**	143-152
▸	Exploring the Theoretical Foundations of Animal-Assisted Therapy in Alleviating Loneliness among the Geriatric Population **Devyani Awasthi**	153-157

UGC Approved Journal No. 48416 (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal) Impact Factor : 6.0
Interdisciplinary Journal of Contemporary Research, Vol. 11, No. 1, January, 2024 ISSN : 2393-8358

करौली जिले के सरकारी व गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कक्षा शिक्षण के प्रति जवाबदेही का तुलनात्मक अध्ययन

श्री जगदीश प्रसाद शर्मा
सहायक आचार्य, वीणा मैमोरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, करौली
श्री छैल बिहारी शर्मा
सहायक आचार्य, वीणा मैमोरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, करौली
डॉ0 मनोज कुमार शर्मा
प्राचार्य, वीणा मैमोरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, करौली

सारांश

किसी भी राष्ट्र के निर्माण में नींव के पत्थर राष्ट्र के गुणी एवं दक्ष शिक्षक होते हैं शिक्षक एक ज्योतिपुंज की तरह है जो स्वयं जलकर राष्ट्र को प्रकाशित करता है शिक्षक राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था का सूत्रधार है उसका कार्य बहुत पवित्र व उत्तरदायित्वपूर्ण है शिक्षक का दायित्व केवल पुस्तकीय ज्ञान देना नहीं है वरन विद्यार्थी का चरित्र निर्माण मानसिक व शारीरिक विकास करना भी है। विद्यालय की सभी गतिविधियां प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षक से जुड़ी है। वर्तमान में शिक्षकों की जवाबदेही से तात्पर्य है कि व्यक्ति को दिए गए कार्य को ठीक प्रकार से निर्वाह करना आता है।

माध्यमिक शिक्षा ऐसी कड़ी है जो प्राथमिक एवं उच्च शिक्षा को दृढ़ता के साथ बांधती है। स्वतंत्र भारत में शिक्षा के स्तर को ऊपर उठाने के लिए अनेक अयोगों का गठन किया गया साधारणतः शिक्षा को शिक्षण विधि, पाठ्यपुस्तकों के चुनाव एवं विचारों की अभिव्यक्ति तो मिलनी ही चाहिए शिक्षण व्यवसाय अन्य व्यवसाय की तरह न होकर अधिक जिम्मेदारी की भूमिका वाला व्यवसाय है। संयुक्त राज्य अमेरिका में अध्यापक सीधे अभिभावकों के प्रति जवाबदेही है। इस भौतिकवादी युग में विकास की प्रक्रिया अपने चरमोत्कर्ष पर है जिसमें शिक्षक का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है अतः संबंधित साहित्य के अध्ययन से स्पष्ट है कि शिक्षक से संबंधित विभिन्न क्षेत्रों में अधिक शोध हुए, लेकिन फिर भी इस शिक्षक की जवाबदेही से संबंधित शोध कार्य का अभाव है इसलिए शोधार्थी ने शिक्षक जवाबदेही से संबंधित शोध का निर्णय किया।

किसी भी अध्ययन को सफलतापूर्वक प्रेषित करने के लिए यह आवश्यक है की समस्या के अनुरूप ही विधि का चयन किया जाए। शोधकर्ता ने आदर्शमूलक सर्वेक्षण विधि को उपयुक्त माना न्यादर्श का चयन करने के लिए शोधार्थी ने करौली जिले में संचालित सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों का चयन यादृच्छिक प्रणाली से किया। शोधार्थी ने इस शोध हेतु माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत 120 शिक्षकों की कक्षा शिक्षण के प्रति जवाबदेही पर शोध कार्य किया है। शिक्षक जवाबदेही मापनी स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया।

शोध समस्या की पृष्ठभूमि

किसी भी राष्ट्र के निर्माण में नींव के पत्थर राष्ट्र के गुणी एवं दक्ष शिक्षक होते हैं शिक्षक एक ज्योतिपुंज की तरह जो स्वयं जलकर राष्ट्र को प्रकाशित करता है वह छात्रों में ज्ञान चक्षु को आलोकित करता है राष्ट्र का भविष्य उसके कंधों पर टिका है अध्यापक के विषय में कहा जाता है। "एक इंजीनियर की त्रुटि से कुछ भवन या पुल टूट सकते हैं, एक डॉक्टर की त्रुटि से कुछ मरीज मर सकते हैं किंतु एक शिक्षक की त्रुटि से संपूर्ण राष्ट्र की हानि होती है" अर्थात अध्यापक वह नक्षत्र है जो संपूर्ण मानव जाति का पथ प्रदर्शित करता है। शिक्षक का किसी भी राष्ट्र व समाज की उन्नति व अवनति में महत्वपूर्ण स्थान होता है।

अतः शिक्षक को सौहार्दपूर्ण, चरित्रवान, समय पाबंद, सकारात्मक दृष्टिकोण, शुद्ध व स्पष्ट वाचनशील, बुद्धिमान, विश्वसनीय, शैक्षिक उद्देश्यों के प्रति प्रतिबद्ध, धैर्यशील, सहानुभूतिपूर्ण नैतिशील आदि गुणों से परिपूर्ण होना चाहिए। आदर्श अध्यापक के गुणों का छात्रों के व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पड़ता है। अतः उसका उद्देश्य बच्चों की समस्त आंतरिक प्रतिभा व व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना तथा उसे समाज एवं राष्ट्र की प्रगति में सहायक एवं कुशल नागरिक बनाना है भारत एक विकासशील देश है। अतः शिक्षा के स्तरोन्नयन हेतु हम शिक्षकों की गुणवत्ता पर ही ध्यान की आवश्यकता है।

अध्यापकों को रचनात्मकता व शिक्षा के प्रति उनकी भावनात्मक जवाबदेही उनकी शिक्षा के लिए गुणवत्ता स्थापित कर सकती है। इसके बाद शिक्षकों के लिए कई प्रकार के सेवा पूर्व एवं सेवारत प्रशिक्षणों की आवश्यकता है सेवापूर्व प्रशिक्षण में उनकी शिक्षा में अभिवृत्ति विकास के लिए कार्यक्रम होना चाहिए। वर्तमान में शिक्षक की भी जवाबदेही से तात्पर्य है कि व्यक्ति को दिए गए कार्य को ठीक प्रकार से निर्वाह करना आता है। इस प्रकार जिम्मेदारी को जवाबदेही अर्थपूर्ण बनाती है दूसरे शब्दों में शिक्षकों की जवाबदेही का अभिप्राय उनका स्वयं अपने आप, छात्रों के प्रति अपने शिक्षण के प्रति सही अनुदेशन से लिया जा सकता है ताकि वे अपने उत्तरदायित्व का पूर्ण रूप से निर्वाह कर सके। शिक्षकों के उत्तरदायित्व पर विचार करने से निम्न प्रश्न उठते हैं:–

अध्यापक किसके प्रति उत्तरदायी हों?, किसलिए हों?, उत्तरदायित्व किस प्रकार निश्चित और कार्यान्वित किया जाये?

शिक्षा समाज का एक अंग है और समाज की आवश्यकतानुसार शिक्षा का स्वरूप निर्धारित होता है। वर्तमान में शिक्षा प्रणाली तीन भागों में विभाजित है 1 प्राथमिक शिक्षा, 2 माध्यमिक शिक्षा, 3 उच्च शिक्षा।

माध्यमिक शिक्षा वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की महत्वपूर्ण कड़ी है माध्यमिक शिक्षा, शिक्षा का वह काल है जो मुख्य रूप से लगभग 12 से 17 वर्ष के बीच के आयु वर्ग वालों हेतु होता है। कार्टर वी गुड के अनुसार "वास्तव में माध्यमिक शिक्षा हमारी शिक्षा व्यवस्था की मेरुदंड या रीड की हड्डी है। प्रोफेसर हुमायु कबीर के अनुसार– "माध्यमिक शिक्षा ऐसी कडी है जो प्राथमिक एवं उच्च शिक्षा को दृढ़ता के साथ बांधती है" बालकों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण व संपूर्ण विकास भी माध्यमिक शिक्षा द्वारा ही पूर्ण हो पाता है।

शोध समस्या का औचित्य

शिक्षा मानव विकास का महत्वपूर्ण साधन है परंतु वर्तमान समय में शिक्षा की गरिमा द्विगुणित हो गई है। शिक्षा न केवल मोक्ष प्राप्ति का साधन मानी जाती है अपितु समाज के विकास का एक सशक्त साधन है। शिक्षा व्यवस्था में सफलता या असफलता उससे संबंधित आयोजकों, शिक्षकों, विद्यार्थियों, अभिभावकों, बुद्धिजीवियों और शिक्षा में रुचि रखने वाले नागरिकों पर निर्भर रहती है।

आधुनिक युग का आरंभ अंग्रेजी शासन काल से होता है इस समय विश्वविद्यालयों की संख्या नगन्य थी। अतः विश्वविद्यालयों में "शिक्षकों की जवाबदेही" का कोई अस्तित्व ही न था जैसे–जैसे भारतीयों में जागरूकता आई वे अपने अधिकारों के प्रति सचेत हुए और उच्च शिक्षा का विकास होता गया। स्वतंत्र भारत में शिक्षा के स्तर को ऊपर उठाने के लिए अनेक आयोगों का गठन किया गया जो इस प्रकार है:–

- मुदालियर शिक्षा आयोग 1952–53
- कोठारी आयोग 1964–66
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968
- नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986–92

प्रशिक्षण महाविद्यालय व विश्वविद्यालय इस प्रकार के शिक्षक तैयार नहीं कर पा रहे हैं। इसके अलावा वर्तमान समय में बहुत से ऐसे विद्यालय भी हैं जहां शिक्षण व्यवसाय धनोपार्जन का एकमात्र साधन प्रतीत होता है लेकिन कुछ ऐसे विद्यालय भी है जहां शिक्षण कार्य पूरी सजकता से हो रहा है। शिक्षक की जवाबदेही को सीमित करना अत्यंत कठिन कार्य है परंतु प्रथम दृष्टि से देखने पर शिक्षक की सर्वप्रथम जवाबदेही उसके छात्रों के प्रति होती है इसलिए शोधार्थी ने शिक्षक की जवाबदेही पर शोध कार्य करने का निर्णय लिया है।

शोध समस्या का उद्देश्य

किसी अध्ययन के लिए सबसे महत्वपूर्ण आधार अनुसंधान के लिए निर्धारित उद्देश्य होते हैं। उद्देश्य ही अंतिम लक्ष्य निर्धारित करते हैं और शोध की प्रक्रिया को संगठित और सही दिशा में अग्रसित करते हैं। अतः शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध हेतु उद्देश्यों का निर्धारण इस प्रकार से किया है:–

- सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कक्षा शिक्षण के प्रति जवाबदेही का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय में कार्यरत शिक्षिकाओं की कक्षा शिक्षण के प्रति जवाबदेही का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक व शिक्षिकाओं की कक्षा शिक्षण के प्रति जवाबदेही का तुलनात्मक अध्ययन करना।

- गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक व शिक्षिकाओं की कक्षा शिक्षण के प्रति जवाबदेही का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएं

शोधार्थी ने प्रस्तावित लघु शोध में अपने कार्य को पूर्ण करने के लिए उद्देश्यों के आधार पर परिकल्पनाओं का निर्माण किया अर्थात शोध में माध्यमिक स्तर पर सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कक्षा शिक्षण के प्रति जवाबदेही ज्ञात करने के लिए शोधार्थी द्वारा शून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया जो इस प्रकार है:–

- सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कक्षा शिक्षण के प्रति जवाबदेही में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- सरकारी व गैरसरकारी विद्यालय में कार्यरत शिक्षिकाओ की कक्षा शिक्षण के प्रति जवाबदेही में कोई का सार्थक अंतर नहीं है।
- सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक व शिक्षिकाओ की कक्षा शिक्षण के प्रति जवाबदेही में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक व शिक्षिकाओं की कक्षा शिक्षण के प्रति जवाबदेही में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

प्रस्तावित शोध में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों की व्याख्या

सरकारी विद्यालय – राज्य सरकार द्वारा संचालित छात्र व छात्राओं के विद्यालय जहां राजस्थान सरकार का प्रत्यक्ष हस्तक्षेप होता है।

गैर सरकारी विद्यालय – गैर सरकारी या निजी संस्थाओं या सदस्यों द्वारा संचालित विद्यालय जिन पर राज्य सरकार या केंद्र सरकार का प्रत्यक्ष हस्तक्षेप नहीं होता है।

शिक्षकों की जवाबदेही – राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अनुसार जवाबदेही किसी कार्यकर्ता द्वारा उसके कार्य के प्रति जिम्मेदारी की अभिव्यक्ति है यह शिक्षक की शिक्षण कार्य के प्रति जवाबदेही की सूचक है।

माध्यमिक स्तर – माध्यमिक स्तर से तात्पर्य राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा संचालित दसवीं व बारहवी स्तर के विद्यालयों से है।

परिसीमन

किसी भी शोध कार्य की कार्य की प्रति एक निश्चित सीमा के अंतर्गत ही आवश्यक है अतः शोधार्थी का प्रस्तुत शोध कार्य करौली जिले के माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों तक सीमित है इस शोध कार्य में माध्यमिक स्तर पर सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कक्षा शिक्षण के प्रति जवाबदेही का अध्ययन किया गया है।

शोध प्रारूप

- शोध कार्य हेतु आदर्शमूलक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। शोध कार्य में जनसंख्या के रूप में सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को लिया गया है।
- जनसंख्या में से यादृच्छिक न्यादर्शन द्वारा न्यादर्श के रूप में 10 विद्यालयों के 120 शिक्षकों का चयन किया गया।
- न्यादर्श के रूप पूर्ण प्रतिनिधित्व बनाने के लिए शहरी व ग्रामीण व शिक्षक–शिक्षिकाओं को रखा गया।
- शोध उपकरण के रूप में स्वनिर्मित शिक्षक जवाबदेही मापनी (टीचर एकाउंटबिल्टी स्केल) का उपयोग किया गया जिसमें 50 कथन चयनित किए गए। प्रत्येक कथन के उत्तर के लिए 3 श्रेणी निर्धारित की गई 1 असहमत 2 तटस्थ 3 सहमत आंकडों के सांख्यिकी विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन और टी अनुपात का प्रयोग किया गया।

तालिका 1 : विभिन्न विद्यालयों से चयनित शिक्षिकाओं की तालिका

क्र.सं.	राजकीय विद्यालय	शिक्षिकाऐं	क्र.सं.	निजी विद्यालय	शिक्षिकाऐं
1	रा.बा.उ.मा.वि. करौली	10	1	लोकहितकारी उ.मा.वि. करौली	7
2	रा.बा.उ.मा.वि. ट्रक यूनियन करौली	6	2	शिवा एकेडमी उ.मा.वि. करौली	5
3	रा.बा.उ.मा.वि. मोहननगर हिण्डौन सिटी	6	3	निर्मल हैप्पी उ.मा.वि. हिण्डौन सिटी	10

4	रा.बा.उ.मा.वि. मासलपुर	7	4	अभय उ.मा.वि. हिण्डौन सिटी	8
5	रा.उ.मा.वि. गुवरेंडा	3	5	ज्योतिबा फुले उ.मा.वि. करौली	4
	कुल शिक्षिकाऐं	**30**		**कुल शिक्षिकाऐं**	**30**

तालिका 2 : विभिन्न विद्यालयों से चयनित शिक्षकों की तालिका

क्र.सं.	राजकीय विद्यालय	शिक्षक	क्र.सं.	निजी विद्यालय	शिक्षक
1	स्व.सै.चिंरजीलाल शर्मा रा.उ.मा.वि. करौली	8	1	लोकहितकारी उ.मा.वि. करौली	7
2	रा.उ.मा.वि. राजौर	6	2	शिवा एकेडमी उ.मा.वि. करौली	5
3	रा.उ.मा.वि. हिण्डौन सिटी	6	3	निर्मल हैप्पी उ.मा.वि. हिण्डौन सिटी	8
4	रा..उ.मा.वि. मासलपुर	5	4	अभय उ.मा.वि. हिण्डौन सिटी	6
5	रा.उ.मा.वि. गुवरेंडा	5	5	ज्योतिबा फुले उ.मा.वि. करौली	4
	कुल शिक्षक	**30**		**कुल शिक्षक**	**30**

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं अर्थापन

शोधार्थी द्वारा प्रदत्तों का सारणीयन कर सांख्यिकीय विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है, जो निम्नलिखित है–

तालिका 3 : शिक्षक जवाबदेही मापनी पर प्राप्त आंकडों का विवरण

क्र.सं.	विद्यालय का नाम	न्यायदर्श सं.	मध्यमान	मानक विचलन
1	सरकारी विद्यालय के शिक्षक	30	114.16	19.5
2	गैर सरकारी विद्यालय के शिक्षक	30	135.26	13.5
3	सरकारी विद्यालय के शिक्षिकाऐं	30	117.50	18.33
4	गैर सरकारी विद्यालय के शिक्षिकाऐं	30	136.6	14.8
	कुल	**120**		

उपपरिकल्पना 1 : सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कक्षा शिक्षण के प्रति जवाबदेही में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 4 : उच्च माध्यमिक स्तर पर सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कक्षा शिक्षण के प्रति जवाबदेही के आकडों की विश्लेषण तालिका

क्र.सं.	विद्यालय का नाम	न्यायदर्श सं.	मध्यमान	मानक विचलन	टी. प्राप्तांक
1	सरकारी विद्यालय के शिक्षक	30	114.16	19.5	4.675
2	गैर सरकारी विद्यालय के शिक्षक	30	135.26	13.5	

सांख्यिकीय आधार पर तुलना करने पर टी प्राप्तांक 4.675 है अतः सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की .01 व .05 पर टी.ए.एस. पर प्राप्त अंकों में सार्थक अंतर है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

उपपरिकल्पना 2 : सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं की कक्षा शिक्षण के प्रति जवाबदेही में कोई सार्थक अंतर नहीं है

तालिका 5 : उच्च माध्यमिक स्तर पर सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं की कक्षा शिक्षण के प्रति जवाबदेही के आकडों की विश्लेषण तालिका

क्र.सं.	विद्यालय का नाम	न्यायदर्श सं.	मध्यमान	मानक विचलन	टी. प्राप्तांक
1	सरकारी विद्यालय की शिक्षिकाऐं	30	117.5	18.33	4.32
2	गैर सरकारी विद्यालय की शिक्षिकाऐं	30	136.6	14.8	

सांख्यिकीय आधार पर तुलना करने पर टी प्राप्तांक 4.32 है अतः सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं की .01 व .05 पर टी.ए.एस. पर प्राप्त अंकों में सार्थक अंतर है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

उपपरिकल्पना 3 : सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक व शिक्षिकाओं की कक्षा शिक्षण के प्रति जवाबदेही में कोई सार्थक अंतर नहीं है

तालिका 6 : उच्च माध्यमिक स्तर पर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक व शिक्षिकाओं की कक्षा शिक्षण के प्रति जवाबदेही के आकडों की विश्लेषण तालिका

क्र.सं.	विद्यालय का नाम	न्यायदर्श सं.	मध्यमान	मानक विचलन	टी. प्राप्तांक
1	सरकारी विद्यालय के शिक्षक	30	114.16	19.5	0.543
2	सरकारी विद्यालय की शिक्षिकाऐं	30	117.4	19.5	

सांख्यिकीय आधार पर तुलना करने पर टी प्राप्तांक 0.543 है अतः सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक व शिक्षिकाओं की .01 व .05 पर टी.ए.एस. पर प्राप्त अंकों में सार्थक अंतर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

उपपरिकल्पना 4 : गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक व शिक्षिकाओं की कक्षा शिक्षण के प्रति जवाबदेही में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 7 : उच्च माध्यमिक स्तर पर गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक व शिक्षिकाओं की कक्षा शिक्षण के प्रति जवाबदेही के आकडों की विश्लेषण तालिका

क्र.सं.	विद्यालय का नाम	न्यायदर्श सं.	मध्यमान	मानक विचलन	टी. प्राप्तांक
1	गैर सरकारी विद्यालय के शिक्षक	30	117.5	18.33	4.32
2	गैर सरकारी विद्यालय की शिक्षिकाऐं	30	136.6	14.8	

सांख्यिकीय आधार पर तुलना करने पर टी प्राप्तांक 4.32 है अतः सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं की .01 व .05 पर टी.ए.एस. पर प्राप्त अंकों में सार्थक अंतर है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

निष्कर्ष के अंतर्गत शोध की विश्लेषण विश्लेषित सामग्री को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया गया है निष्कर्ष के अभाव में किसी कार्य को पूर्णता प्रदान करने का उचित सार्थक नहीं रखता है शोध कार्य में सरकारी में गैर सरकारी विद्यालय में कार्यरत 60 शिक्षक व60 शिक्षिकाओं जिससे सरकारी विद्यालयों के 30 शिक्षक व 30 शिक्षिकाओ तथा गैर सरकारी विद्यालयमें 30 शिक्षक व 30 शिक्षिकाओ ली गई जिसका शिक्षक जवाब देही संप्रत्य में तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. गेरी एन ए स्टडी ऑफ़ टीचर्स प्रोफेशनल रिसोर्स लिबर्टी इन रिलेशन टू एडमिनी स्टेटमेंट इस टाइप सी वी 1983
2. तिवारी डी डी एजुकेशन रिसर्च न्यूयॉर्क मैकमिलन 1983
3. राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद अध्यापक शिक्षा का पाठ्यचर्या प्रारूप 1996